JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

''दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन''

डा0 मनवीर सिहं, एसोशिएट प्रोफेसर बी0एड0 (शिक्षक शिक्षा) विभाग, ने0मे0शि0ना0 दास (पी0जी0) महाविद्यालय, बदायूँ (उ0प्र0)

''शिक्षा मानव को बन्धनों से मुक्त करती है। आज के युग में तो यह लोकतन्त्र की भावना का आधार भी है। जन्म तथा अन्य कारणों से उत्पन्न जाति एवं वर्गगत विषमताओं को दूर करते हुए मनुष्यों को इन सबसे ऊपर उठाती है।''

— श्रीमती इन्दिरा गाँधी

किसी भी राष्ट्र के विकास में शिक्षा एक सफल तथा प्रभावकारी साधन है, इसी तथ्य को ध्यान में रखते हुए भारतीय संविधान के अनुच्छेद 21(क) में शिक्षा को एक भूल अधिकार का दर्जा प्रदान करते हुए सबके लिए शिक्षा की व्यवस्था की गयी। किन्तु भारत जैसे विशाल जनसंख्या वाले राष्ट्र में समाज के प्रत्येक व्यक्ति को शिक्षा प्रदान करना कोई आसान कार्य नहीं था। अतः शीघ्र ही इस बात की आवश्यकता महसूस की जाने लगी कि मात्र स्कूलो, कालेजों या विश्वविद्यालयों की स्थापना करके नियमित शिक्षा द्वारा समाज के प्रत्येक वर्ग को शिक्षित नहीं किया जा सकता। जिसके परिणामस्वरूप दूरस्था एवं मुक्त शिक्षा का उद्भव हुआ।

वास्तव में 21वीं शताब्दी ज्ञान की शताब्दी है और भारत के समक्षा ज्ञान संवेदी समाज के निर्माण की चुनौती है। अतः शिक्षा के सार्वभौमिकरण एवं लोकतन्त्रीकरण के व्यापक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए दूरस्थ शिक्षा प्रणाली, परम्परागत शिक्षा प्रणाली के सहायक के रूप में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रही है। वर्तमान में कुल एक राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 14 राज्य मुक्त विश्वविद्यालय तथा 207 दूरस्थ शिक्षा संस्थान आवश्यक एवं रोजगारपरक शिक्षा अति अल्प शुल्क में प्रदान कर रहे हैं। सन् 1985 में इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (इग्नू) की स्थापना की गई, जो दूरस्थ शिक्षा के क्षेत्र में अपना अतुलनीय योगदान दे रहा है। इग्नू का मुख्य उद्देश्य देश की शिक्षा पद्धति में मुक्त विश्वविद्यालय व दूरस्थ शिक्षा को बढ़ावा देना तथा ऐसी पद्धतियों में स्तरों का समन्वय करके मानक निर्धारित करना है। यह उच्च शिक्षा की एक ऐसी नई प्रणाली सुलभ कराता है, जो शिक्षण की शैली एवं गति, पाठ्यक्रम के संयोजन, दाखिले की योग्यता, प्रवेश की आयु, मूल्यांकन के तरीकों आदि की दृष्टि से मुक्त एवं उदार है। इसने एक समन्वित बहु–माध्यम शिक्षण प्रणाली अपनायी है, जिसमें मुद्रित सामग्री और दृश्य–श्रवण माध्यम के साथ–साथ देश भर में फैले अध्ययन केन्द्रों में परामर्श कक्षाओं का भी आयोजन किया जाता है। विश्वविद्यालय सतत् मूल्यांकन के अतिरिक्त सत्रावसान, परिक्षाएं भी आयोजित करता है।

प्रस्तुत शोध–पत्र में इग्नू द्वारा दी जाने वाली उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों जैसे– उच्च शिक्षा की प्रकृति, विशेषताओं, प्रवेश प्रक्रिया, सत्रीय कार्यो, परामर्श सत्रों, विद्यार्थी सेवा सहायता, शिक्षण, उपाधि एवं रोजगार के अवसर आदि के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति को जानने का प्रयास किया गया है। जिससे यह पता चल सके कि इग्नू के

कितने विद्यार्थी उच्च शिक्षा के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं तथा कितने विद्यार्थी नकारात्मक अभिवृत्ति रखते हैं।

समस्या कथन :– '' *दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन।''*

तकनीकी पदों का परिभाषीकरण:–

दूरस्थ शिक्षा :– दूरस्थ शिक्षा, शिक्षा का वह स्वरूप है जिसमें शिक्षार्थी को दूर से शिक्षा प्रदान करने की व्यवस्था की जाती है। यह शिक्षा विविध शैक्षिक पृष्ठ भूमि वाले तथा तथा विभिन्न भौगोलिक क्षेत्रों मे विखरे शिक्षार्थियों को उनकी रूचि व सुविधा के अनुकूल ज्ञान, कौशल एवं अभिवृत्ति प्रदान करने का एक तरीका है जिसमें विद्यार्थी को किसी भी तरह से विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यलयों में शिक्षा ग्रहण करने नहीं आना पड़ता है बल्कि वे अपने–अपने स्थान पर रहते हुए आकाशवाणी, दूरदर्शन, टेपरिकार्डर आडियों एवं वीडियों कैसेट द्वारा ज्ञान प्राप्त करते हैं।

उच्च शिक्षा :– माध्यमिक शिक्षा के ऊपर कालेजों या विश्वविद्यालयों द्वारा दी जाने वाली शिक्षा अर्थात् स्नातक, स्नातकोत्तर, रोजगारपरक एवं व्यवहारिक शिक्षा को उच्च को उच्च शिक्षा के दायरे में लाया जाता है।

विद्यार्थी :– इग्नू के अध्ययन केन्द्रों में विभिन्न कार्यक्रमों में नामांकित लोगों को विद्यार्थियों के रूप में लिया गया है।

अभिवृत्ति :– अभिवृत्ति व्यक्ति के व्यक्तित्व का एक महत्वपूर्ण पक्ष है, जो विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों में उसके द्वारा किये जाने वाले व्यवहार को प्रदर्शित करता है। अभिवृत्ति किसी निर्दिष्ट वस्तु या मुद्दे के प्रति सोचने, महसूस करने, प्रत्यक्षीकरण करने एवं व्यवहार करने की पूर्व व्यवस्थित प्रवणता है।

शोध के अध्ययन के उद्देश्य :–

1. दूरस्थ शिक्षा में उच्च के प्रति इग्नू के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
2. दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों के प्रति इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
3. दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति लिंग के आधार पर इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
4. दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति निवास क्षेत्र के आधार पर इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।
5. दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति वैवाहिक स्थिति के आधार पर इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन करना।

परिकल्पनायें :–

- दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों के प्रति इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
- दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विवाहित तथा अविवाहित विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

शोध अध्ययन की विधि :– प्रस्तुत शोध–पत्र के अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के अन्तर्गत वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में प्रचलित व्यवहारों, विश्वासों, दृष्टिकोणों या अभिवृत्तियों के प्रभाव का जो अनुभव किया जा रहा है, अध्ययन किया जाता है।

जनसंख्या :– प्रस्तुत शोध–पत्र हेतु शोधकर्ता ने इग्नू क्षेत्रीय अलीगढ़ के अध्ययन केन्द्रों में विभिन्न कार्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियों को जनसंख्या के रूप में लिया है।

न्यादर्श :– प्रस्तुत शोध–पत्र समंको के संकलन के लिए इकाइयों का चयन स्तरीकृत यादृच्छित न्यादर्श विधि (Statified Random Sampling Method) का प्रयोग करते हुए, न्यादर्श के रूप में इग्नू के विभिन्न कार्यक्रमों में अध्ययनरत कुल विद्यार्थियों में से 100 विद्यार्थियों को चुना गया है, जिनमें पुरूष तथा महिला विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण :– इग्नू में उच्च शिक्षा के प्रति विद्यार्थियों की अभिवृत्ति हेतु स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है। इस मापनी की विश्वसनीयता का आंकलन स्पिलिट हॉफ विधि द्वारा ज्ञात किया गया तथा विश्वसनीयता गुणांक 0.75 प्राप्त किया गया।

शोध के चर :– प्रस्तुत शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए चरों का समावेश किया गया है, जिनमें 7 चर विषय, निवास क्षेत्र, वैवाहिक स्थिति, निराश्रित चर तथा अभिवृत्ति को आश्रित चर के रूप में लिया गया है।

प्रयुक्त सांख्यिकीय प्रविधियां :– शोध के उद्देश्यों को प्राप्त करने तथा परिकल्पनों के सत्यापन हेतु निम्न सांख्यिकीय प्रविधियों का प्रयोग किया गया है–

1. मध्यमान (M)
2. मानक विचलन (T)
3. टी–मान (t)

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या :–

तालिका–1

दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्रमांक	विषय (वर्ग)	विद्यार्थियों की संख्या (n)	मध्यमान (M)	मानक विचलन (σ)
1	कला	18	153.14	11.41
2	विज्ञान	16	158.69	10.50
3	वाणिज्य	16	147.91	15.95
4	प्रबन्धन	15	164.23	11.81
5	कम्प्यूटर	18	156.85	12.35
6	शिक्षक शिक्षा	17	160.10	18.40

तलिका–1 में दिये गये मध्यमानों के अनुसार इग्नू के प्रबन्धन वर्ग के विद्यार्थियों की उच्च शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिक धनात्मक पायी गयी है, परन्तु यह धनात्मकता सार्थक नहीं है। अतः प्रथम शून्य परिकल्पना ***"दूरस्थ शिक्षा के प्रति इग्नू के विभिन्न विषयों के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति मं कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"*** स्वीकृत होती है। शोधकर्ता प्रबन्धन वर्ग के विद्यार्थियों की उच्च अभिवृत्ति का कारण विषयनुगत विशेषज्ञता को मानते हैं।

तालिका–2

दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों के प्रति इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्रमांक	दूरस्थ शिक्षा के आयाम	कथनों/प्रश्नों की संख्या	मध्यमान
1	दूरस्थ शिक्षा की प्रकृति	5 कथन	14.79
2	दूरस्थ शिक्षा की विशेषतायें	5 कथन	21.87
3	दूरस्थ शिक्षा में प्रवेश की प्रक्रिया	5 कथन	19.85
4	दूरस्थ शिक्षा में सत्रीय कार्य	5 कथन	21.03
5	दूरस्थ शिक्षा में परामर्श सत्र	5 कथन	20.16
6	विद्यार्थी सेवा सहायता	5 कथन	21.87
7	दूरस्थ शिक्षा की शिक्षा प्रणाली	5 कथन	19.73
8	दूरस्थ शिक्षा में उपाधि एवं रोजगार के अवसर	5 कथन	17.52

तालिका–2 के अनुसार मध्यमानों के आधार पर इग्नू के विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों, दूरस्थ शिक्षा की विशेषतायें एवं विद्यार्थी सेवा सहायता के प्रति अभिवृत्ति अधिक धनात्मक पायी गयी, परन्तु यह धनात्मकता सार्थक नहीं है। अतः द्वितीय शून्य परिकल्पना ''दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के विभिन्न आयामों के प्रति इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है। शोधकर्ता मानते हैं कि इग्नू में प्रवेश एवं शिक्षण प्रक्रिया अधिक प्रभावशाली, लचीली एवं विद्यार्थियों के अनुकूल होना ही दूरस्थ शिक्षा की विशेषतायें एवं विद्यार्थी सेवा सहायता के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति का कारण है।

तालिका–3

दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति लिंग के आधार पर इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्रमांक	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1	पुरूष	58	98	159.24	14.99	1.85	सार्थक नहीं
2	महिला	42		154.18	12.34		

तलिका–3 में प्रदर्शित परिणामों से यह स्पष्ट होता है कि पुरूष तथा महिला विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 159.24 तथा 154.18 एवं प्राप्त टी–मान 1.85 है, जो असार्थक है। अतः तृतीय शून्य परिकल्पना ''दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के पुरूष एवं महिला विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है।

तलिका–4

दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले इग्नू के विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्रमांक	लिंग	विद्यार्थियों की संख्या	स्वतंत्रांश संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	टी–मान	सार्थकता का स्तर
1	शहरी	45	98	163.33	17.26	4.06	0.01 स्तर पर सार्थक
2	ग्रामीण	55		150.09	14.90		

तलिका–4 के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि इग्नू के शहरी क्षेत्र के विद्यार्थियों तथा ग्रामीण क्षेत्र के विद्यार्थियों के मध्यमान क्रमशः 163.33 तथा 150.09 एवं प्राप्त टी–मान 4.06 है, जो 0.01 स्तर पर सार्थक है। अतः चतुर्थ शून्य परिकल्पना ''दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के शहरी तथा ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' अस्वीकृत होती है। शोधकर्ता का मत है कि इस सार्थक अन्तर का कारण विद्यार्थियों का परिवेश है।

तलिका–5

दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विवाहित तथा अविवाहित विद्यार्थियों की अभिवृत्ति

क्रमांक	**वैवाहिक स्थति**	**विद्यार्थियों की संख्या**	**स्वतंत्रांश संख्या**	**मध्यमान**	**मानक विचलन**	**टी–मान**	**सार्थकता का स्तर**
1	विवाहित	51	98	158.26	14.74	0.97	सार्थक नहीं
2	अविवाहित	49		155.16	17.23		

प्रस्तुत तालिका–5 का अध्ययन करने पर स्पष्ट होता है कि इग्नू के विवाहित तथा अविवाहित विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मध्यमान क्रमशः 158.26 तथा 155.16 एवं प्राप्त टी–मान 0.97 है, जो असार्थक है। अतः पंचम शून्य परिकल्पना ''दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति इग्नू के विवाहित तथा अविवाहित विद्यार्थियों की अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकृत होती है।

<u>शोध के निष्कर्ष</u> :–

- मध्यमानों के आधार पर इग्नू के प्रबन्धन वर्ग के विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अन्य वर्गो के विद्यार्थियों से अधिक धनात्मक पायी गयी है, परन्तु धनात्मक सार्थक नहीं है।
- मध्यमानों के आधार पर इग्नू के विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के आयाम, दूरस्थ शिक्षा की विशेषतायें एवं विद्यार्थी सेवा सहायता के प्रति अभिवृत्ति अधिक धनात्मक पायी गई, परन्तु अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- इग्नू के पुरूष विद्यार्थियों की तुलना में महिला विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पायी गई है, परन्तु अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।
- इग्नू के शहरी क्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की तुलना में ग्रामीण क्षेत्र में निवास करने वाले विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति अधिक धनात्मक पायी गई है, अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर है।
- इग्नू के विवाहित विद्यार्थियों की तुलना में अविवाहित विद्यार्थियों की दूरस्थ शिक्षा में उच्च शिक्षा के प्रति अधिक धनात्मक अभिवृत्ति पायी गई है, अभिवृत्ति में सार्थक अन्तर नहीं है।

<u>भावी अनुसन्धान हेतु सुझाव</u> :–

1. प्रस्तुत शोध 14 जनपदों के अन्तर्गत किया गया है। भावी अनुसन्धानकर्ता उत्तर प्रदेश के स्तर पर भी अध्ययन कर सकते हैं।
2. दूरस्थ शिक्षा के विकास एवं सफलता में विद्यार्थी सेवा सहायता कार्यक्रमों की भूमिका का अध्ययन भी भावी शोधकर्ता कर सकते हैं।
3. सभी के लिए शिक्षा अभियान में दूरस्थ शिक्षा की भूमिका का अध्ययन भी भावी शोधकर्ता कर सकते हैं।
4. प्रस्तुत शोध में विद्यार्थियों की अभिवृत्ति का अध्ययन किया गया है। भावी अनुसंधानकर्ता अभिभावकों एवं परामर्शदाताओं की अभिवृत्ति का अध्ययन भी कर सकते हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. पांडेय, रामशकल (1997): भारतीय शिक्षा की समसामयिक समस्याएं, पेज–233,
2. आर0ए0 शर्मा (1997): शिक्षा अनुसंधान, पेज–121, सूर्या पब्लिकेशन, मेरठ,
3. इग्नू (2011) : विद्यार्थी पुस्तिका एवं विवरणिका, इग्नू मैदान गढ़ी, नई दिल्ली
4. Bakshish Singh (1986) : Distance Education : Experience of Open University A Report University New Vol.- 24(6),
5. Institute for Higher Education Policy, Distance Learning in Higher Education, Washington, D.C., 1999.
6. Web Search : www.ignou.ac.in, www.uprtouallahabad.org.in, www.dec.ac.in, www.ugc.ac.in, www.google.com